छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय)

QS ASIAN UNIVERSITY RANKINGS ASIA 2025 : SOUTHERN ASIA

प्रेरणा स्रोत
श्रीमती आनंदीबेन पटेल
मा. कुलाधिपति एवं राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

चयनित 05 ग्रामों के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य कहानी प्रतियोगिता

संरक्षक
प्रो. विनय कुमार पाठक
कुलपति
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

कहानी प्रतियोगिता
द्वितीय/अंतिम चरण

(चयनित 05 ग्रामों के विद्यालयों के कक्षा समूहवार प्रथम दो विजेताओं के मध्य)

कक्षा समूह 1
(कक्षा 03 से 05 तक)

विषय: मेरा गांव
प्रतिभागी: 14

विजेता: सौम्या राठौर
कक्षा: 05
प्राथमिक विद्यालय, होरा कछार

कक्षा समूह 2
(कक्षा 06 से 08 तक)

विजेता: नंदिनी
कक्षा: 06
पूर्व माध्यमिक विद्यालय, गबड़हा

विषय: मेरा भारत महान
प्रतिभागी: 08

कक्षा समूह 3
(कक्षा 09 से 10 तक)

विषय: सेनानायक तात्याटोपे
प्रतिभागी: 06

विजेता: रिजा
कक्षा: 10
भजन लाल स्व॰ सं॰ से॰ इण्टर कॉलेज

कक्षा समूह 4
(कक्षा 11 से 12 तक)

विजेता: आंशी
कक्षा: 11
भजन लाल स्व॰ सं॰ से॰ इण्टर कॉलेज

विषय: कानपुर का स्वतंत्रता संग्राम
प्रतिभागी: 02

झलकियाँ

झलकियाँ

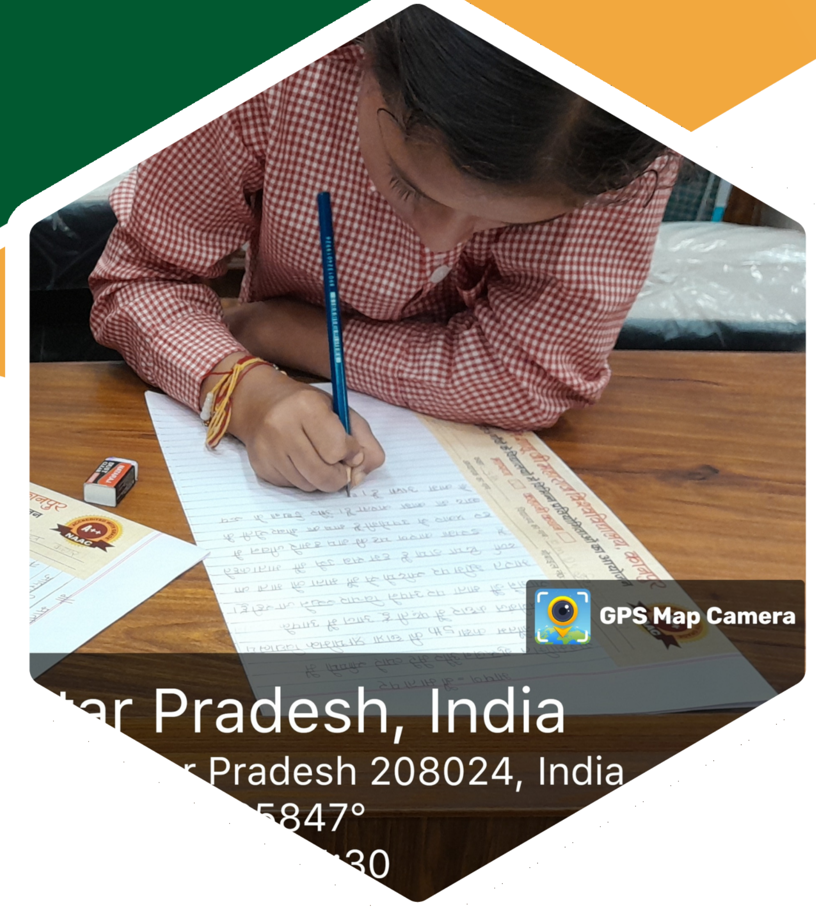

कहानी प्रतियोगिता

द्वितीय चरण/अंतिम चरण

दिनांक: 01 सितम्बर 2025

कक्षा समूह-01

(कक्षा 03 से 05 तक)

विषय : मेरा गांव

नाम: सौम्या राठौर

कक्षा: 05

विद्यालय का नाम:

प्राथमिक विद्यालय, होरा कछार,

विकास खण्ड कल्यानपुर, कानपुर

स्थान: प्रथम

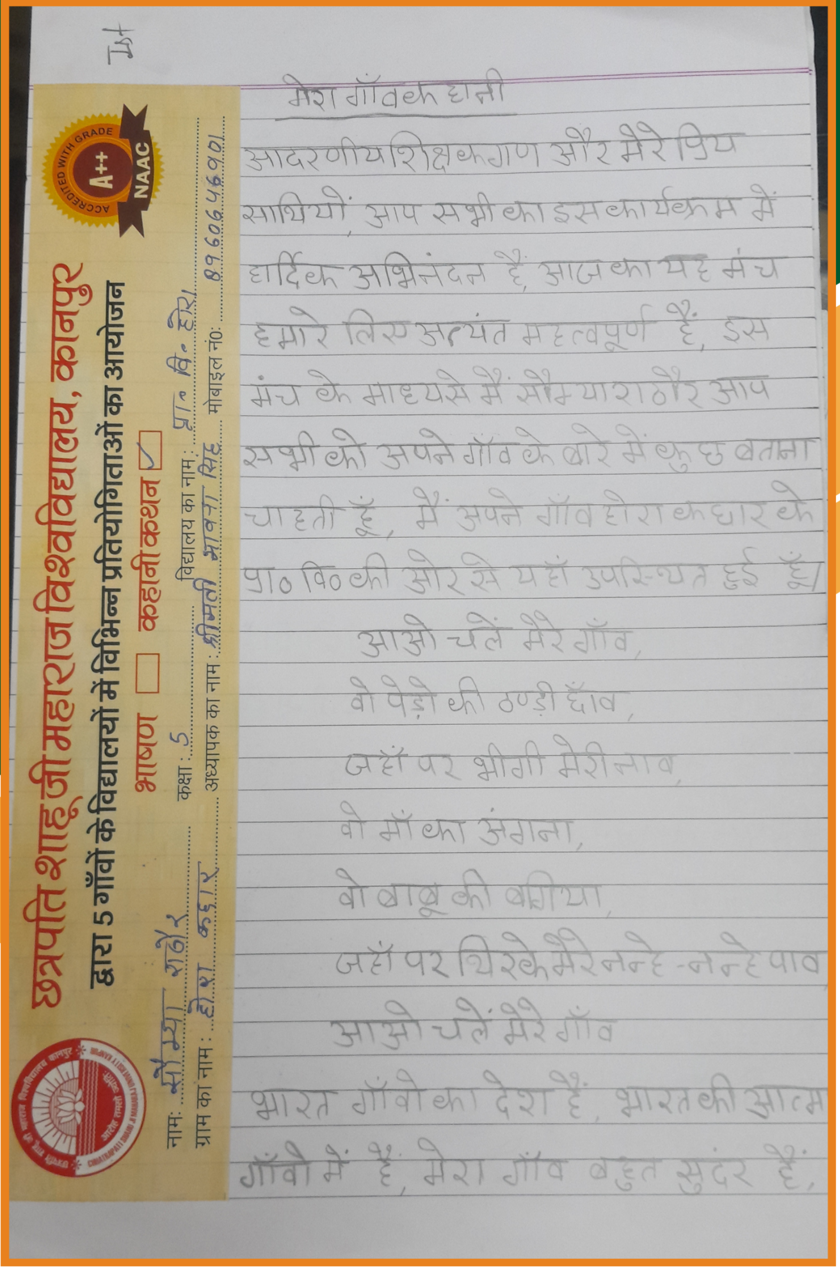

Ist

मेरा गाँव कहानी

आदरणीय शिक्षकगण और मेरे प्रिय साथियों, आप सभी का इस कार्यक्रम में हार्दिक अभिनंदन है, आज का यह मंच हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, इस मंच के माध्यम से मैं सौम्या राठौर आप सभी को अपने गाँव के बारे में कुछ बताना चाहती हूँ, मैं अपने गाँव होरा कछार के प्रा० वि० की ओर से यहाँ उपस्थित हुई हूँ।

आओ चलें मेरे गाँव,
वो पेड़ो की ठण्डी छाँव,
जहाँ पर भीगी मेरी नाव,
वो माँ का अंगना,
वो बाबू की बगिया,
जहाँ पर थिरके मेरे नन्हे-नन्हे पाव,
आओ चलें मेरे गाँव

भारत गाँवो का देश है, भारत की आत्मा गाँवो में है, मेरा गाँव बहुत सुंदर है,

(पृष्ठ 01)

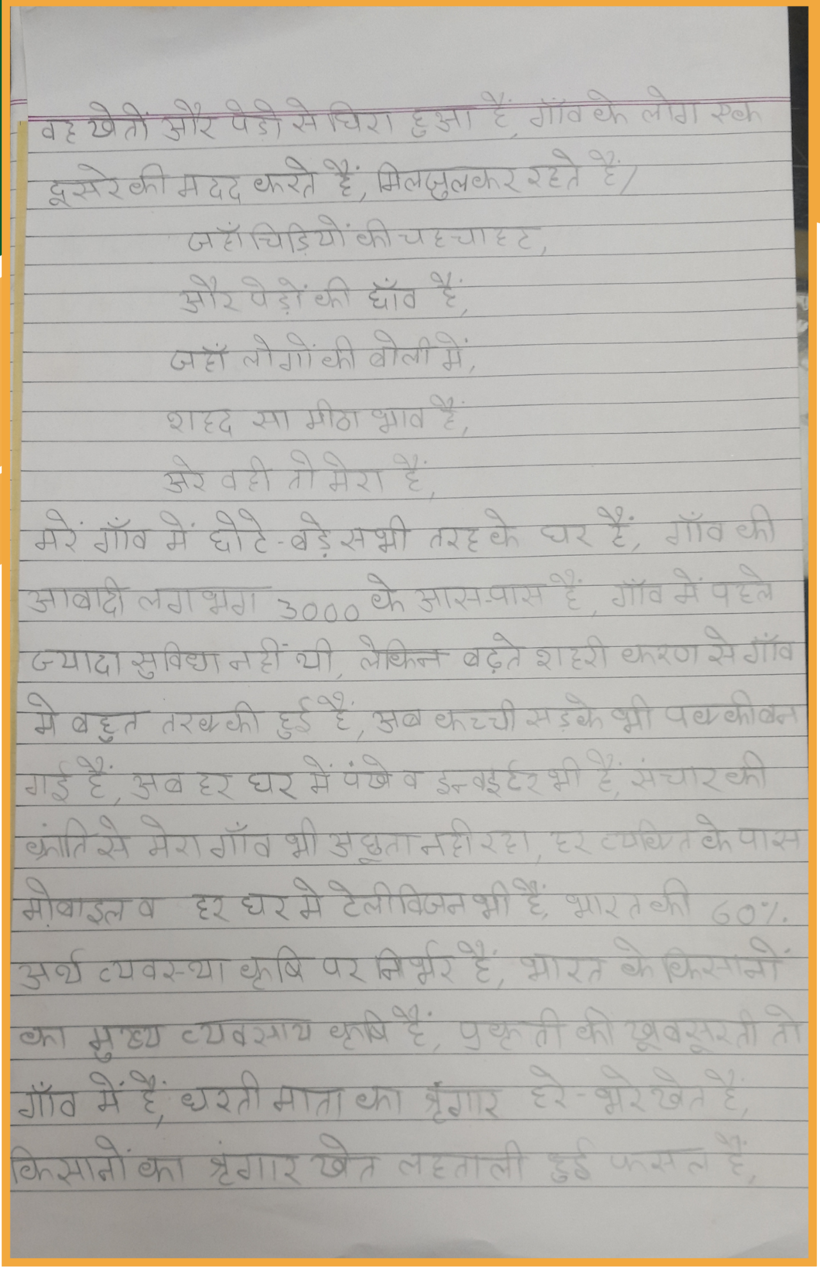

वह खेतो और पेड़ो से घिरा हुआ है, गाँव के लोग एक दूसरे की मदद करते हैं, मिलजुलकर रहते हैं।

जहाँ चिड़ियों की चहचाहट,
और पेड़ों की छाँव है,
जहाँ लोगों की बोली में,
शहद सा मीठा भाव है,
अरे वही तो मेरा है,

मेरे गाँव में छोटे-बड़े सभी तरह के घर हैं, गाँव की आबादी लगभग 3000 के आस-पास है, गाँव में पहले ज्यादा सुविधा नहीं थी, लेकिन बढ़ते शहरीकरण से गाँव मे बहुत तरक्की हुई है, अब कच्ची सड़के भी पक्की बन गई है, अब हर घर में पंखे व इन्वर्टर भी है, संचार की क्रांति से मेरा गाँव भी अछूता नही रहा, हर व्यक्ति के पास मोबाइल व हर घर मे टेलीविजन भी है, भारत की 60% अर्थ व्यवस्था कृषि पर निर्भर है, भारत के किसानों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, प्रकृती की खूबसूरती तो गाँव में है, धरती माता का श्रृंगार हरे-भरे खेत है, किसानों का श्रृंगार खेत लहलाती हुई फसल है,

(पृष्ठ 02)

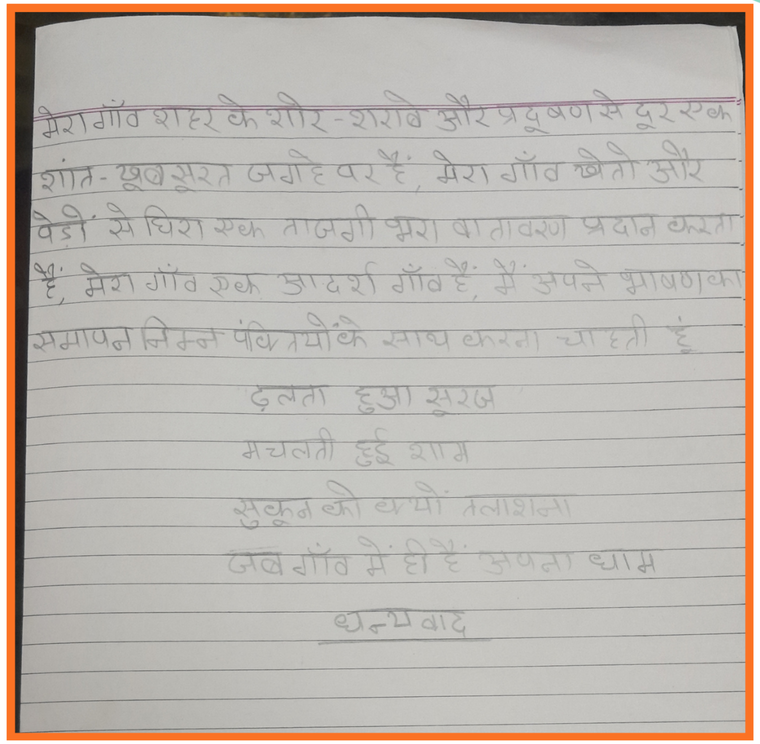

मेरा गाँव शहर के शोर-शराबे और प्रदूषण से दूर एक शांत-खूबसूरत जगह पर है, मेरा गाँव खेतो और पेड़ो से घिरा एक ताजगी भरा वातावरण प्रदान करता है, मेरा गाँव एक आदर्श गाँव है, मैं अपने भाषण का समापन निम्न पंक्तियों के साथ करना चाहती हूं

ढलता हुआ सूरज
मचलती हुई शाम
सुकून को क्यों तलाशना
जब गाँव में ही है अपना धाम

धन्यवाद

(पृष्ठ 03)

नाम: अयांश

कक्षा: 03

विद्यालय का नाम:
प्राथमिक विद्यालय, प्रथम गबड़हा, विकास खण्ड चौबेपुर कानपुर

स्थान: द्वितीय

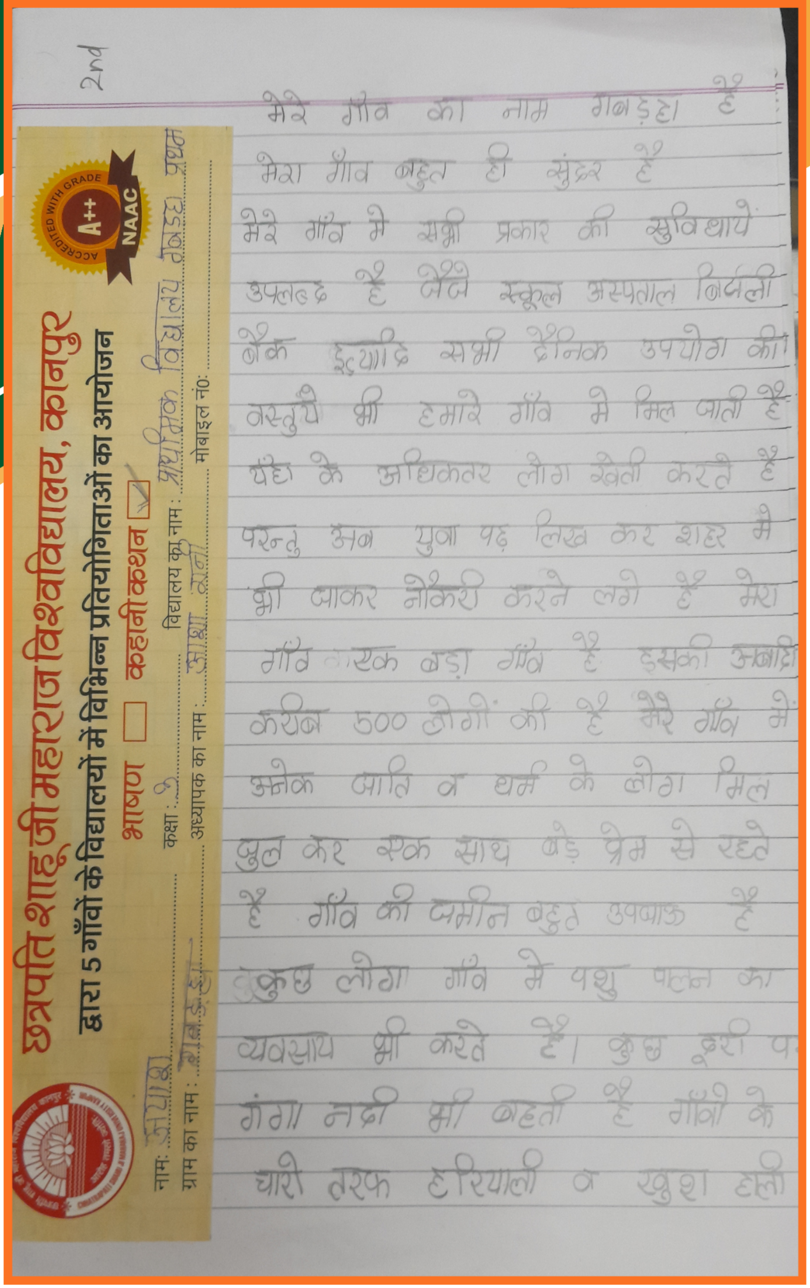
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
द्वारा 5 गाँवों के विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

मेरे गाँव का नाम गबड़हा है
मेरा गाँव बहुत ही सुंदर है
मेरे गाँव मे सभी प्रकार की सुविधाये
उपलब्ध है जैसे स्कूल अस्पताल बिजली
बैंक इत्यादि सभी दैनिक उपयोग की
वस्तुये भी हमारे गाँव मे मिल जाती है
यँहा के अधिकतर लोग खेती करते है
परन्तु अब युवा पढ़ लिख कर शहर मे
भी जाकर नौकरी करने लगे है मेरा
गाँव एक बड़ा गाँव है इसकी आबादी
करीब 500 लोगों की है मेरे गाँव मे
अनेक जाति व धर्म के लोग मिल
जुल कर एक साथ बड़े प्रेम से रहते
है गाँव की जमीन बहुत उपजाऊ है
कुछ लोग गाँव मे पशु पालन का
व्यवसाय भी करते है। कुछ दूरी पर
गंगा नदी भी बहती है गाँवो के
चारो तरफ हरियाली व खुशहाली

(पृष्ठ 01)

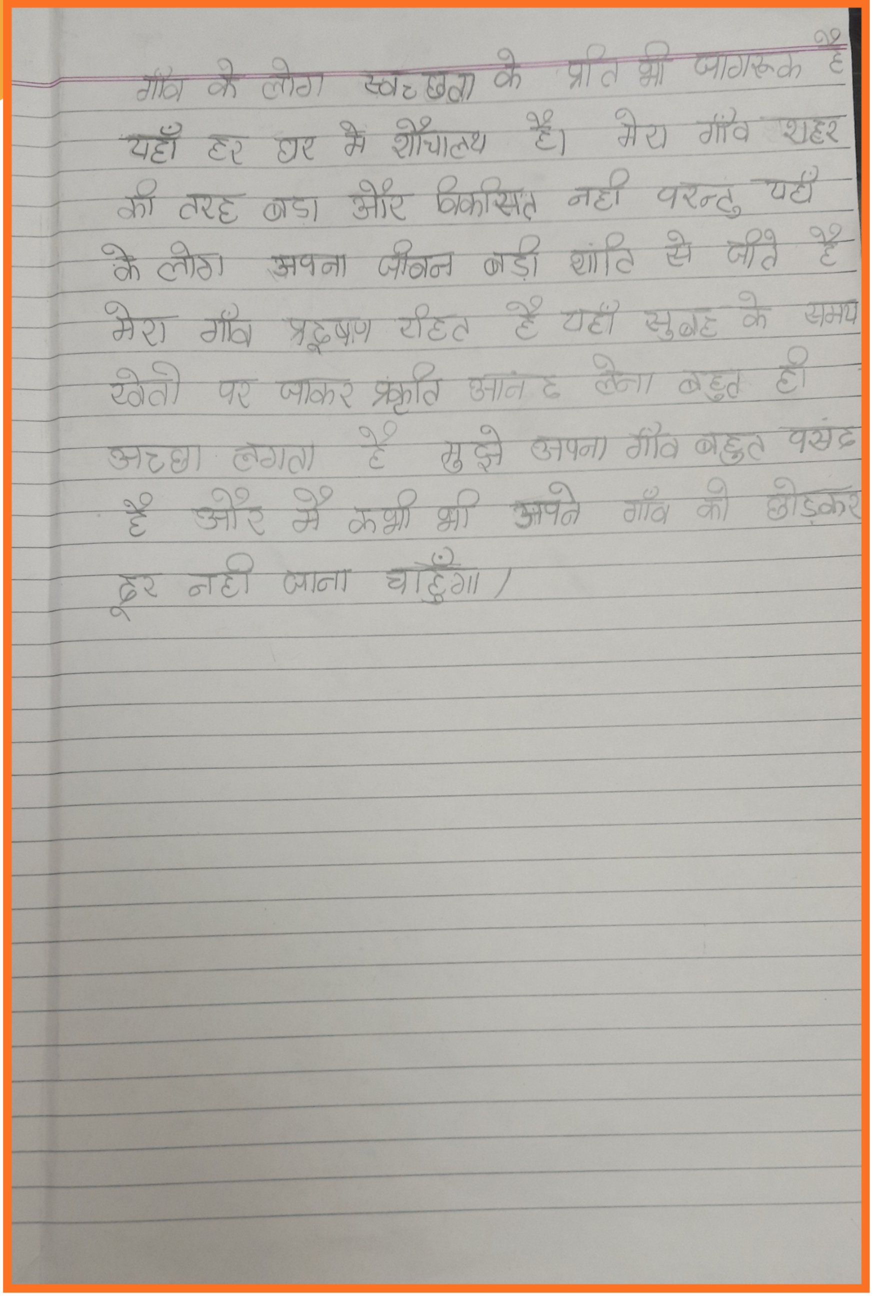
गाँव के लोग स्वच्छता के प्रति भी जागरूक है
यहाँ हर घर मे शौचालय है। मेरा गाँव शहर
की तरह बड़ा और विकसित नही परन्तु यहाँ
के लोग अपना जीवन बड़ी शांति से जीते है
मेरा गाँव प्रदूषण रहित है यहाँ सुबह के समय
खेतो पर जाकर प्रकृति आनंद लेना बहुत ही
अच्छा लगता है मुझे अपना गाँव बहुत पसंद
है और मै कभी भी अपने गाँव को छोड़कर
दूर नही जाना चाहूँगा।

(पृष्ठ 02)

कहानी प्रतियोगिता

द्वितीय चरण/अंतिम चरण

दिनांक: 01 सितम्बर 2025

कक्षा समूह-02

(कक्षा 06 से 08 तक)

विषय : मेरा भारत महान

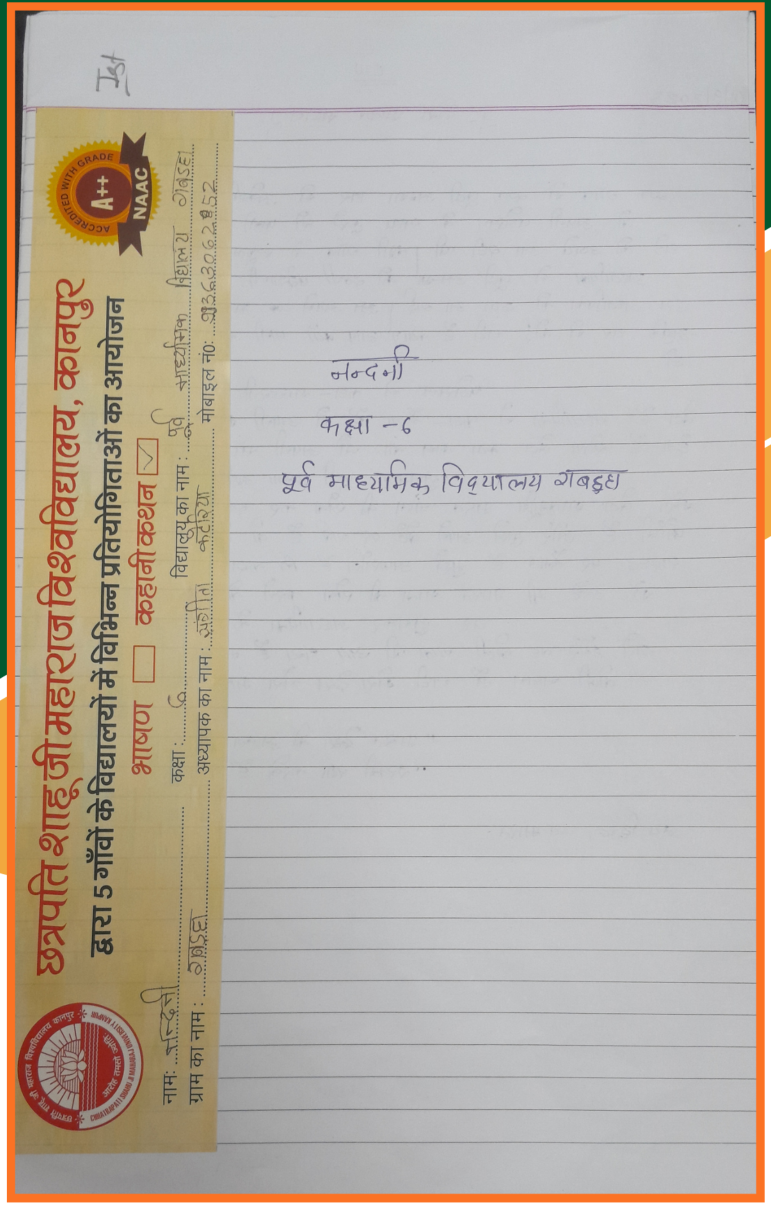

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
द्वारा 5 गाँवों के विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन
भाषण ☐ कहानी कथन ☑
नाम: नन्दनी
कक्षा: 6
विद्यालय का नाम: पूर्व माध्यमिक विद्यालय गबड़हा

नन्दनी
कक्षा -6
पूर्व माध्यमिक विद्यालय गबड़हा

(पृष्ठ 01)

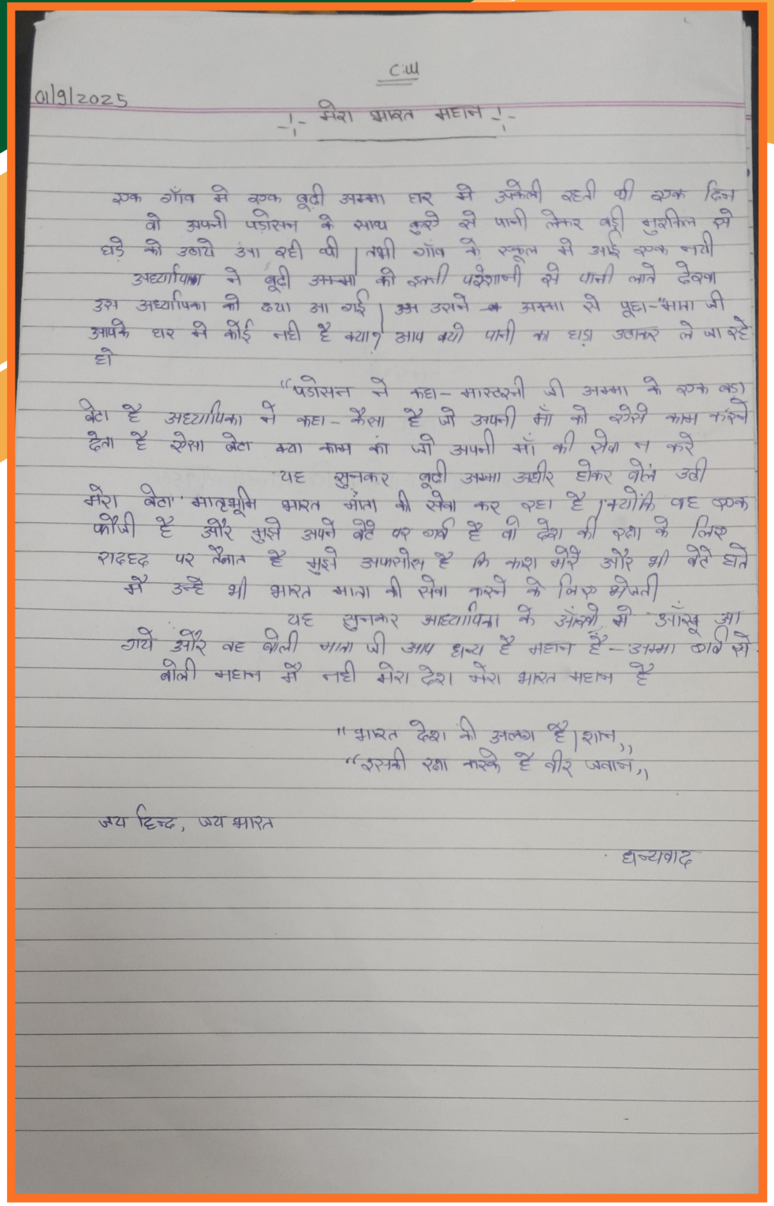

C.W

01/9/2025

-!- मेरा भारत महान -!-

एक गॉंव मे एक बूढी अम्मा घर मे अकेली रहती थी एक दिन वो अपनी पड़ोसन के साथ कुएे से पानी लेकर बड़ी मुश्किल से घड़े को उठाये उठा रही थी। तभी गॉंव के स्कूल मे आई एक नयी अध्यापिका ने बूढी अम्मा को इतनी परेशानी से पानी लाते देखा उस अध्यापिका को दया आ गई। उसने अम्मा से पूछा-"माता जी आपके घर मे कोई नही है क्या? आप क्यो पानी का घड़ा उठाकर ले जा रहे हो

"पड़ोसन ने कहा- मास्टरनी जी अम्मा के एक बड़ा बेटा है अध्यापिका ने कहा- कैसा है जो अपनी माँ को एसे काम करने देता है ऐसा बेटा क्या काम का जो अपनी माँ की सेवा न करे

यह सुनकर बूढी अम्मा अधीर होकर बोलं उठी मेरा बेटा मातृभूमि भारत माता की सेवा कर रहा है। क्योंकि वह एक फौजी है और मुझे अपने बेटे पर गर्व है वो देश की रक्षा के लिए सरहद पर तैनात है मुझे अफसोस है कि काश मेरे और भी बेटे होते मै उन्हे भी भारत माता की सेवा करने के लिए भेजती

यह सुनकर अध्यापिका के आँखो मे आँसू आ गये और वह बोली माता जी आप धन्य है महान है- अम्मा गर्व से बोली महान मै नही मेरा देश। मेरा भारत महान है

"भारत देश की अलग है। शान,,
"इसकी रक्षा करते है वीर जवान,,

जय हिन्द, जय भारत

धन्यवाद

(पृष्ठ 02)

नाम: नंदिनी
कक्षा: 06
विद्यालय का नाम:
पूर्व माध्यमिक विद्यालय
गबड़हा, विकास खण्ड, चौबेपुर
कानपुर

स्थान: प्रथम

नाम: तान्या कुशवाहा

कक्षा: 07

विद्यालय का नाम:

पूर्व माध्यमिक विद्यालय ईश्वरीगंज, विकास खण्ड कल्यानपुर, कानपुर

स्थान: द्वितीय

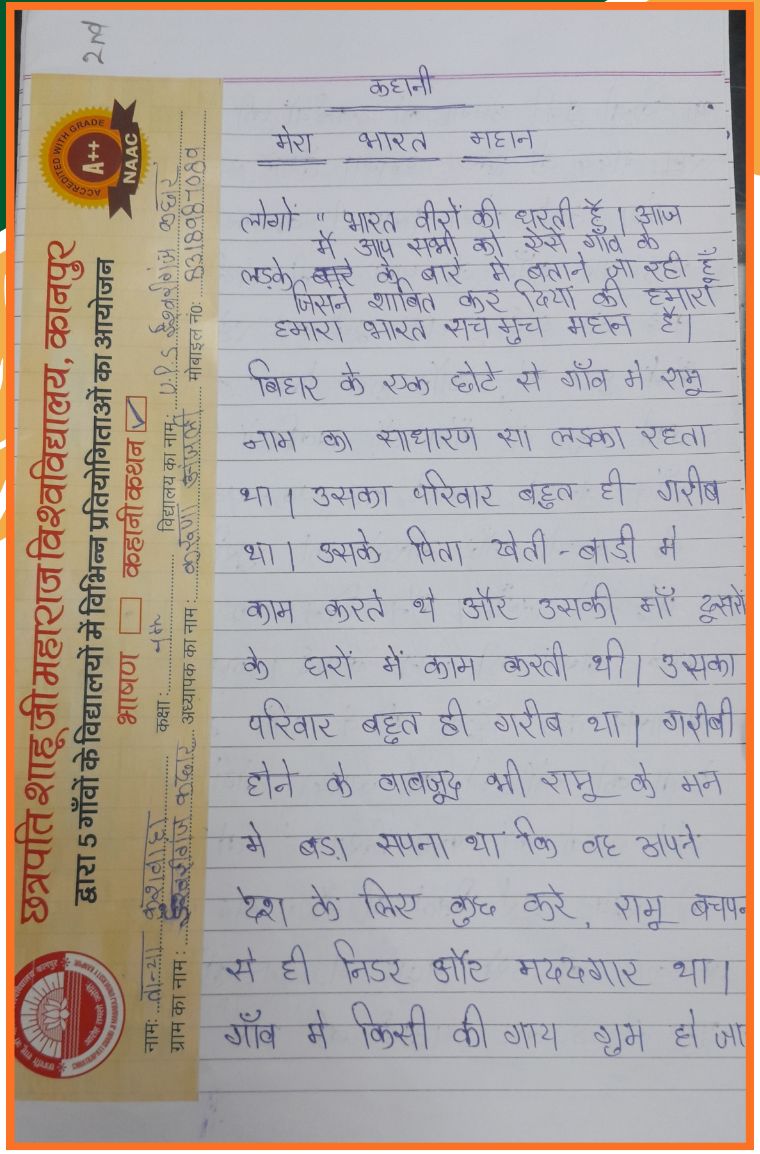

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
द्वारा 5 गाँवों के विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन
भाषण कहानी कथन

कहानी

मेरा भारत महान

लोगों " भारत वीरों की धरती है। आज मैं आप सभी को ऐसे गाँव के लड़के ~~बारे~~ के बारे मे बताने जा रही हूँ जिसने शाबित कर दिया की हमारा हमारा भारत सच मुच महान है।

बिहार के एक छोटे से गाँव मे रामू नाम का साधारण सा लड़का रहता था। उसका परिवार बहुत ही गरीब था। उसके पिता खेती-बाड़ी मे काम करते थे और उसकी माँ दूसरों के घरों में काम करती थी। उसका परिवार बहुत ही गरीब था। गरीबी होने के बावजूद भी रामू के मन मे बड़ा सपना था कि वह अपने देश के लिए कुछ करे, रामू बचपन से ही निडर और मददगार था। गाँव मे किसी की गाय गुम हो जा

(पृष्ठ 01)

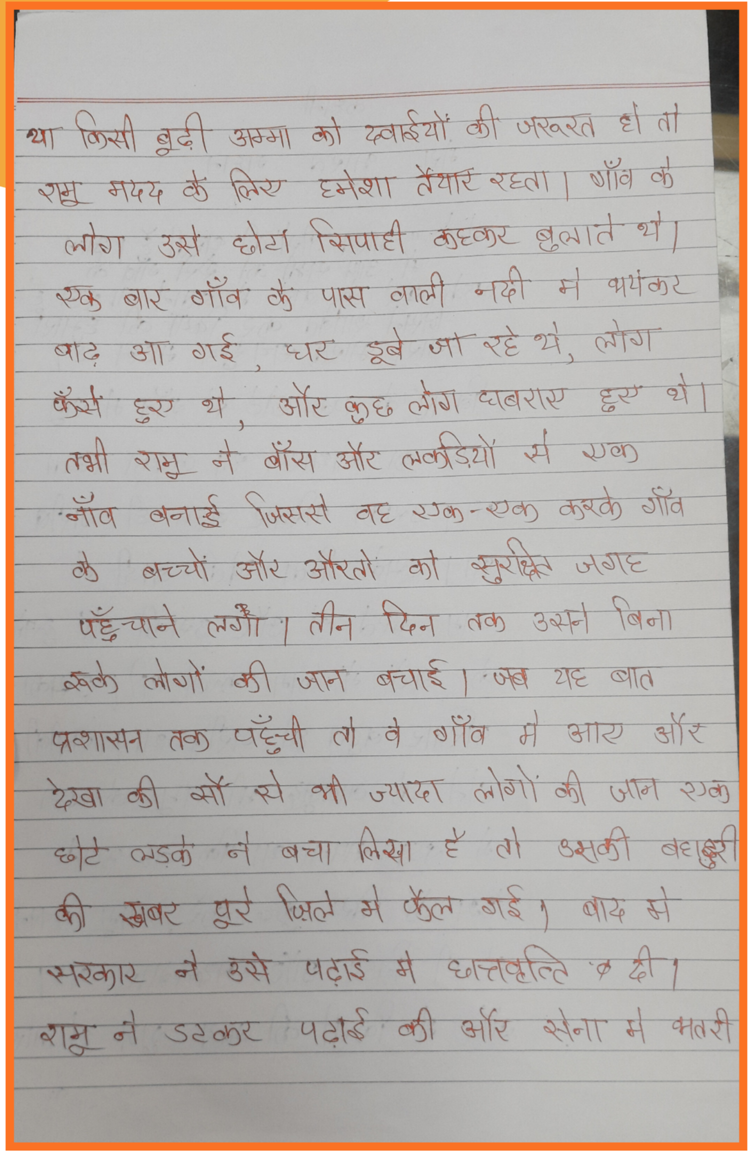

था किसी बुढ़ी अम्मा को दवाईयों की जरूरत हो तो रामु मदद के लिए हमेशा तैयार रहता। गाँव के लोग उसे छोटा सिपाही कहकर बुलाते थे।
एक बार गाँव के पास वाली नदी मे भयंकर बाढ़ आ गई, घर डूबे जा रहे थे, लोग फँसे हुए थे, और कुछ लोग घबराए हुए थे। तभी रामु ने बाँस और लकड़ियों से एक नाँव बनाई जिससे वह एक-एक करके गाँव के बच्चों और औरतो को सुरक्षित जगह पहुँचाने लगा। तीन दिन तक उसने बिना रुके लोगों की जान बचाई। जब यह बात प्रशासन तक पहुँची तो वे गाँव मे आए और देखा की सौ से भी ज्यादा लोगों की जान एक छोटे लड़के ने बचा लिया है तो उसकी बहादुरी की खबर पूरे जिले मे फैल गई। बाद मे सरकार ने उसे पढ़ाई मे छात्रवृत्ति दी।
रामू ने डटकर पढ़ाई की और सेना मे भरती

(पृष्ठ 02)

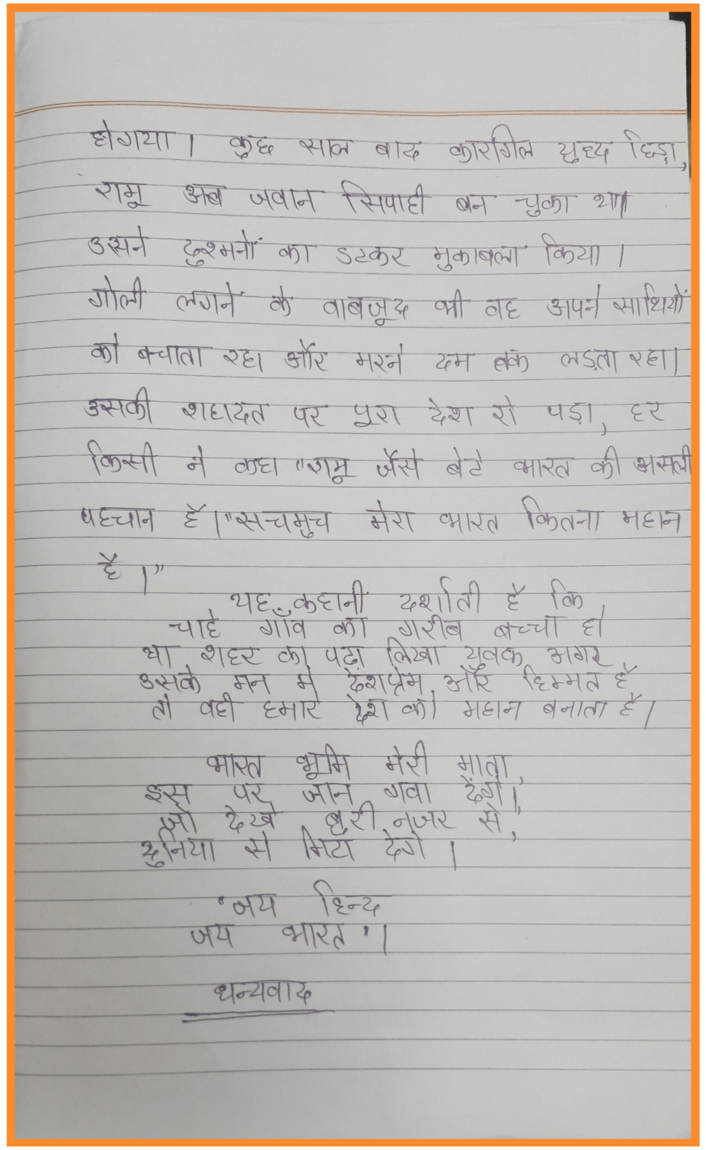

होगया। कुछ साल बाद कारगिल युद्ध छिड़ा, रामू अब जवान सिपाही बन चुका था। उसने दुश्मनों का डटकर मुकाबला किया। गोली लगने के बावजुद भी वह अपने साथियों को बचाता रहा और मरने दम तक लड़ता रहा। उसकी शहादत पर पुरा देश रो पड़ा, हर किसी ने कहा "रामू जैसे बेटे भारत की असली पहचान है।"सचमुच मेरा भारत कितना महान है।"

यह कहानी दर्शाती है कि चाहे गाँव का गरीब बच्चा हो या शहर का पढ़ा लिखा युवक अगर उसके मन मे देशप्रेम और हिम्मत है तो वही हमारे देश को महान बनाता है।

भारत भूमि मेरी माता,
इस पर जान गवा देंगे,
जो देखे बुरी नजर से,
दुनिया से मिटा देंगे।

"जय हिन्द
जय भारत"।

धन्यवाद

(पृष्ठ 03)

कहानी प्रतियोगिता

द्वितीय चरण/अंतिम चरण

दिनांक: 01 सितम्बर 2025

कक्षा समूह-03

(कक्षा 09 से 10 तक)

विषय : सेनानायक तात्याटोपे

नाम: रिजा
कक्षा: 10
विद्यालय का नाम:
भजन लाल स्व• सं• से• इण्टर कॉलेज
विकास खण्ड चौबेपुर , कानपुर

स्थान: प्रथम

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
द्वारा 5 गाँवों के विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन
भाषण ☐ कहानी कथन ☑
नाम: Rizа कक्षा: 10th विद्यालय का नाम: B.L.S.S.S. Inter College (ज्ञानडहा)
ग्राम का नाम: (बिल्हौर) ... अध्यापक का नाम: ... मोबाइल नं0: 9026039585

सेनानायक तात्या टोपे

परिचय :- तात्या टोपे प्रथम स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख सेनानायक थे। वे बहुत ही बहादुर, बुद्धिमान और शौर्यवीर व्यक्ति थे। उन्हें महाराष्ट्र का 'बाघ' के नाम से भी जाना जाता है। इनका वास्तविक नाम रामचन्द्र पाण्डुरंग राव यवलकर था।

जन्म स्थान एवं माता-पिता :-

सेनानायक तात्या टोपे का जन्म 16 फरवरी सन् 1814 ई० में महाराष्ट्र भारत में हुआ था। इनके पिता जी का नाम पाण्डुरंग राव यवलकर तथा माता जी का नाम रुक्माबाई था।

तात्या टोपे नाम कैसे पड़ा :-

तात्या टोपे इनका वास्तविक नाम नही था अपितु इनका वास्तविक नाम रामचन्द्र पाण्डुरंग राव यवलकर था। तात्या टोपे नाम के पीछे एक कहानी है कहा जाता है कि तात्या टोपे को बाजीराव ने एक बेशकीमती व नायाब टोपी दी थी जिसे ये हमेशा पहने रहते थे। हमेशा

(पृष्ठ 01)

पहनने के कारण लोग इन्हे टोपे नाम से पुकारने लगे थे। इस तरह इनका नाम तात्या टोपे पड़ गया।

कौशल :- तात्या टोपे नाम के एक वीर पुरुष थे। वे लड़ने की कला मे प्रवीण व माहिर थे। वे सभी तरह के अस्त्र-शस्त्र चलाने मे निपुण थे।

1857 ई० के विद्रोह में भूमिका :-

1857 ई० के विद्रोह मे तात्या टोपे की भूमिका महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक थी। 1857 ई० के विद्रोह मे तात्या टोपे को सेनापति नियुक्त किया गया। झाँसी की लड़ाई की कमान तात्या टोपे के हाथ मे दी गई। तात्या टोपे ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई साथ मिलकर कई लड़ाईयाँ अंग्रेजो से लड़ी और अंग्रेजों को परास्त भी किया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई नाना साहब पेशवा, राव साहब और बहादुरशाह 'जफर' के विदा व मृत्यु हो जाने के बाद भी तात्या टोपे ने विद्रोहियो की कमान सँभाली और अंग्रेजो से लड़ते रहे।

मृत्यु :- तात्या टोपे की मृत्यु की तीन कहानी कही जाती है।

पहली कहानी :- अंग्रेजो द्वारा पकड़े जाने पर 18 अप्रैल सन् 1859 ई०

(पृष्ठ 02)

में शिवपुरी (मध्यप्रदेश) में तात्या टोपे को फाँसी दे दी गयी।

दूसरी कहानी :- किसी और व्यक्ति को तात्या टोपे समझकर पकड़ लिया और उन्हें फाँसी दे दी गई और बाद में तात्या टोपे को भी फाँसी दे दी गयी।

तीसरी कहानी :- उन्होने अपनी अंतिम साँस सन् 1909 ई० मे ली और फिर उनके परिवारवालो ने विधिवत तरीके से इनका अंतिम संस्कार कर दिया।

ऐसे क्रान्तिकारी वीर को हमारा सत-सत नमन।

(पृष्ठ 03)

नाम: नवनीत पटेल

कक्षा: 10

विद्यालय का नाम:

भजन लाल स्व• सं• से• इण्टर कॉलेज विकास खण्ड चौबेपुर , कानपुर

स्थान: द्वितीय

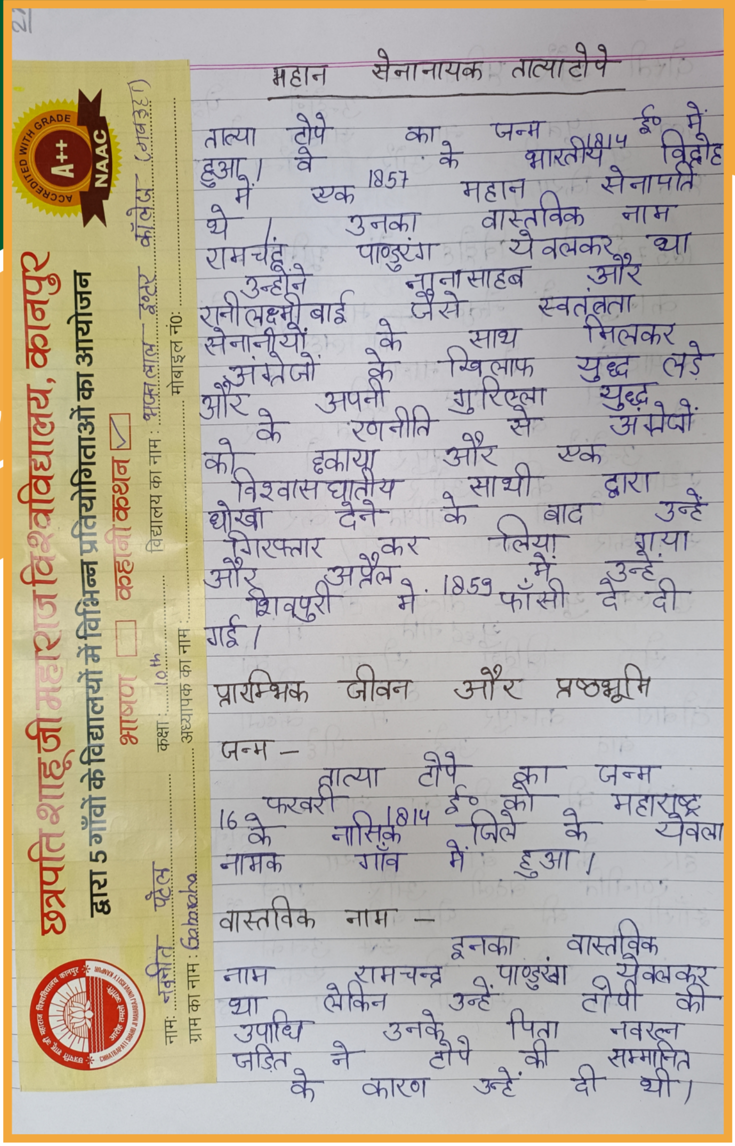

(पृष्ठ 01)

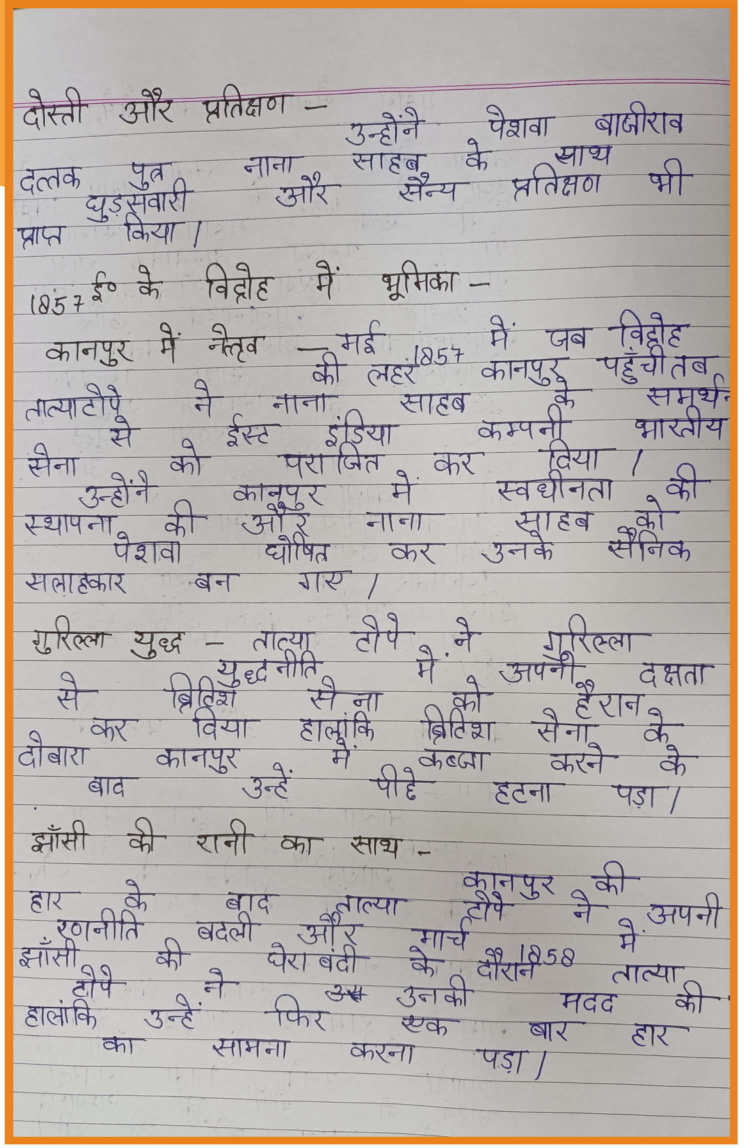

(पृष्ठ 02)

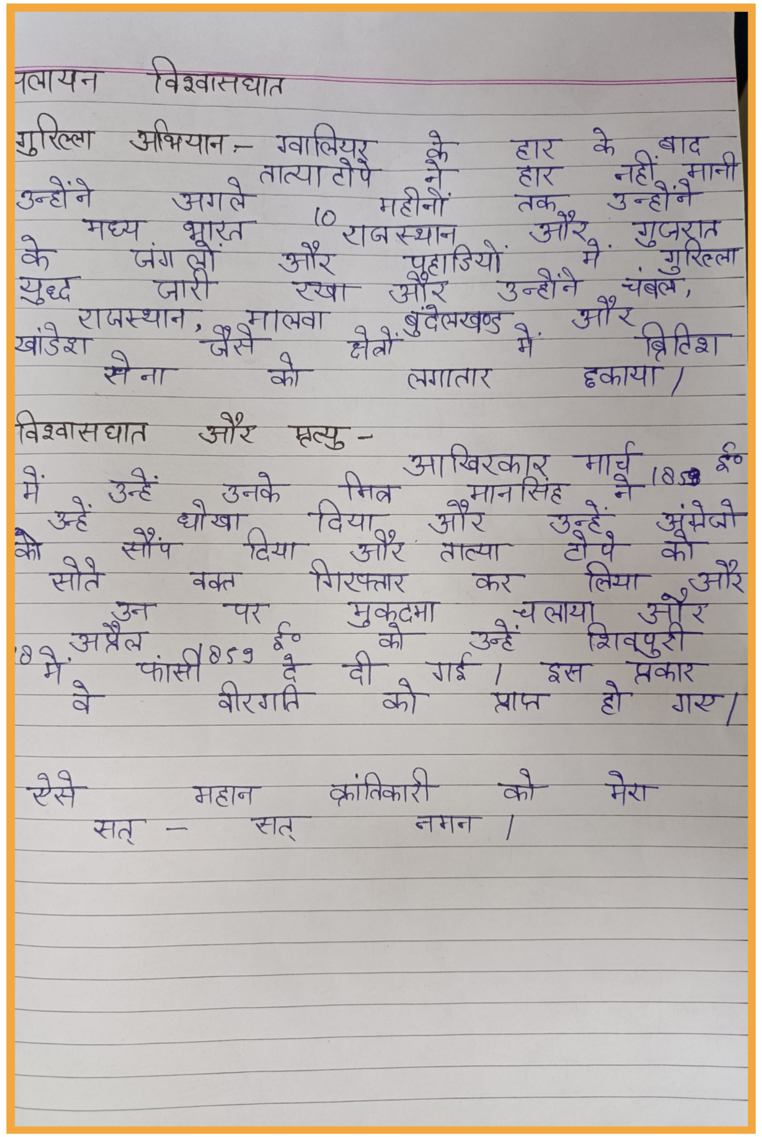

(पृष्ठ 03)

कहानी प्रतियोगिता

द्वितीय चरण/अंतिम चरण

दिनांक: 01 सितम्बर 2025

कक्षा समूह-04

(कक्षा 11 से 12 तक)

विषय :

कानपुर का स्वतंत्रता संग्राम

नाम: आंशी
कक्षा: 11
विद्यालय का नाम:
भजन लाल स्व• सं• से• इण्टर कॉलेज
विकास खण्ड चौबेपुर , कानपुर

स्थान: प्रथम

Ist

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
द्वारा 5 गाँवों के विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन
भाषण ☐ कहानी कथन ☑
नाम: Anshi कक्षा: 11th विद्यालय का नाम: B.L.S.S.S. Inter College (चौबेपुर)
ग्राम का नाम: Bagiya Sahabaha अध्यापक का नाम: मोबाइल नं0:

कहानी

कानपुर का स्वतंत्रता संग्राम

कानपुर भारत का एक प्रसिद्ध शहर है, जिसने सन् 1857 से 1947 तक भारत मे होने वाले स्वतंत्रता संग्राम मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कानपुर के लोगो ने एकजुट होकर ब्रिटिश शासन का विरोध किया।

1857 का विद्रोह –

कानपुर का 1857 का विद्रोह जिसे भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम के रूप मे जाना जाता है का नेतृत्व नाना साहेब ने किया था। इस विद्रोह ने कानपुर के लोगो के मन मे राष्ट्र - प्रेम का संचार किया।

स्वदेशी आंदोलन

सन 1905 मे बंगाल विभाजन के विरोध मे स्वदेशी आंदोलन की शुरूआत की गई थी। जिसमे कानपुर के लोगो ने सक्रीय रूप से भाग लिया। इस आंदोलन मे कानपुर के द्वारा ब्रिटिश सरकार की वस्तुओ का बहिष्कार किया गया तथा स्वदेशी वस्तुओ के उपयोग को बढ़ावा दिया गया।

(पृष्ठ 01)

असहयोग आंदोलन –

सन 1942 मे महात्मा गाँधी जी द्वारा शुरू किये गए असहयोग आंदोलन मे कानपुर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आंदोलन के दौरान कानपुर शहर मे जगह - जगह पर प्रदर्शन किये गए। जिस कारण लोगो के मन मे जो ब्रिटिश सरकार के लिए डर था, वह समाप्त हुआ।

कानपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी –

कानपुर शहर मे बहुत - से महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियो ने जन्म लिया है, जिन्होने भारत के स्वतंत्रता संग्राम मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जैसे –

नाना साहेब – नाना साहेब ने ब्रिटिश सेना का विरोध करने वाली सेना का नेतृत्व किया। इनकी बुद्धिमत्ता तथा युद्ध कौशल ने इन्हे कानपुर के लोगो के लिए एक नायक बना दिया।

तात्या टोपे – अगर कानपुर के स्वतंत्रता संग्राम की बात करे और तात्या टोपे का नाम न आए इन्होने नाना साहेब के साथ मिलकर भारत को स्वतंत्र बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

पृथ्वीनाथ चक्र – इन्होने सन् 1888 मे राष्ट्रीय कॉग्रेस की एक शाखा कानपुर मे स्थापित करने की मे सहायता की। इन्होने कई लड़ाइयों मे भी भाग लिया।

(पृष्ठ 02)

ऐसे बहुत से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियो ने कानपुर मे जन्म लिया है और आगे जन्म लेते रहेंगे।

कानपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियो का बलिदान –

कानपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का बलिदान अतुलनीय है, जिसे कभी भी भुलाया नही जा सकता। जब भी भारत के स्वतंत्रता संग्राम की बात होगी तो कानपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियो का नाम जरूर लिया जायेगा।

(पृष्ठ 03)

नाम: प्रीति सिंह

कक्षा: 11

विद्यालय का नाम:

भजन लाल स्व• सं• से• इण्टर कॉलेज

विकास खण्ड चौबेपुर , कानपुर

स्थान: द्वितीय

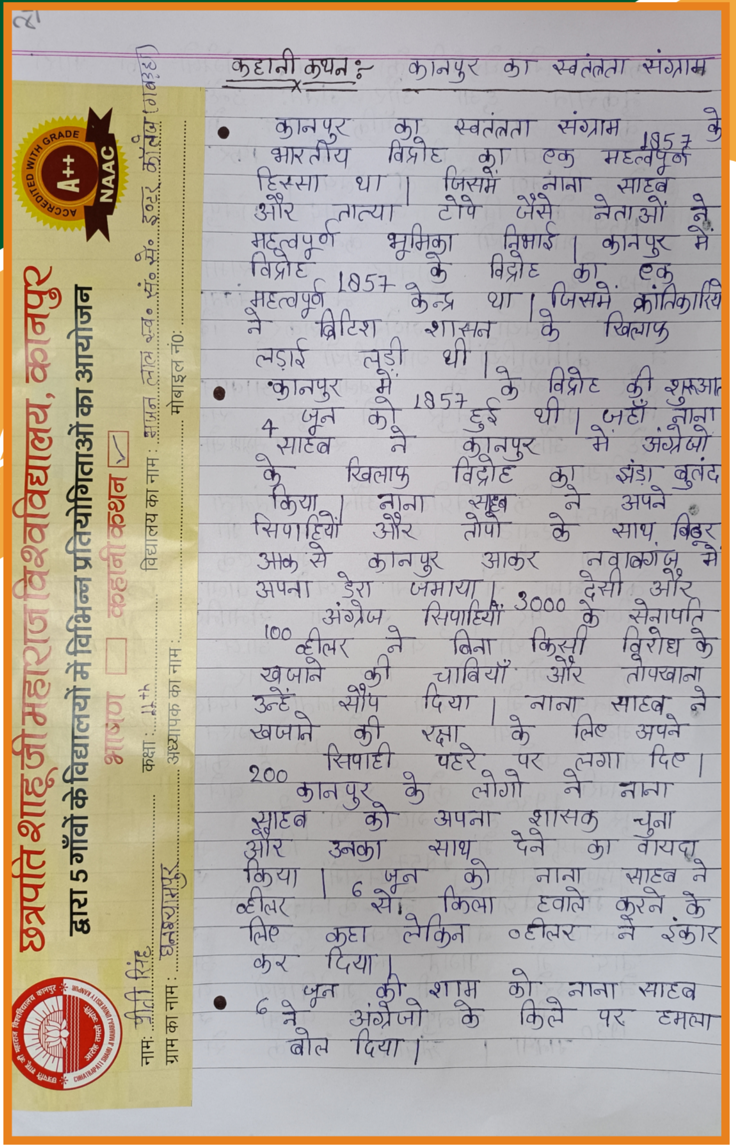

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

द्वारा 5 गाँवों के विद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

भाषण ☐ कहानी कथन ☑

नाम: प्रीति सिंह कक्षा: 11th विद्यालय का नाम: भजन लाल स्व० सं० से० इण्टर कॉलेज (गबड़हा)

ग्राम का नाम: छनछ्यापुर अध्यापक का नाम: .... मोबाइल नं0: ....

कहानी कथन :- कानपुर का स्वतंत्रता संग्राम

- कानपुर का स्वतंत्रता संग्राम 1857 के भारतीय विद्रोह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। जिसमें नाना साहब और तात्या टोपे जैसे नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कानपुर में विद्रोह 1857 के विद्रोह का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। जिसमे क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।
- कानपुर में 1857 के विद्रोह की शुरूआत 4 जून को हुई थी। जहाँ नाना साहब ने कानपुर में अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह का झंडा बुलंद किया। नाना साहब ने अपने सिपाहियों और तोपो के साथ बिठूर आक से कानपुर आकर नवाबगंज में अपना डेरा जमाया। 3000 देसी और 100 अंग्रेज सिपाहियों के सेनापति व्हीलर ने बिना किसी विरोध के खजाने की चाबियाँ और तोपखाना उन्हें सौंप दिया। नाना साहब ने खजाने की रक्षा के लिए अपने 200 सिपाही पहरे पर लगा दिए। कानपुर के लोगो ने नाना साहब को अपना शासक चुना और उनका साथ देने का वायदा किया। 6 जून को नाना साहब ने व्हीलर से किला हवाले करने के लिए कहा लेकिन व्हीलर ने इंकार कर दिया।
- 6 जून की शाम को नाना साहब ने अंग्रेजो के किले पर हमला बोल दिया।

(पृष्ठ 01)

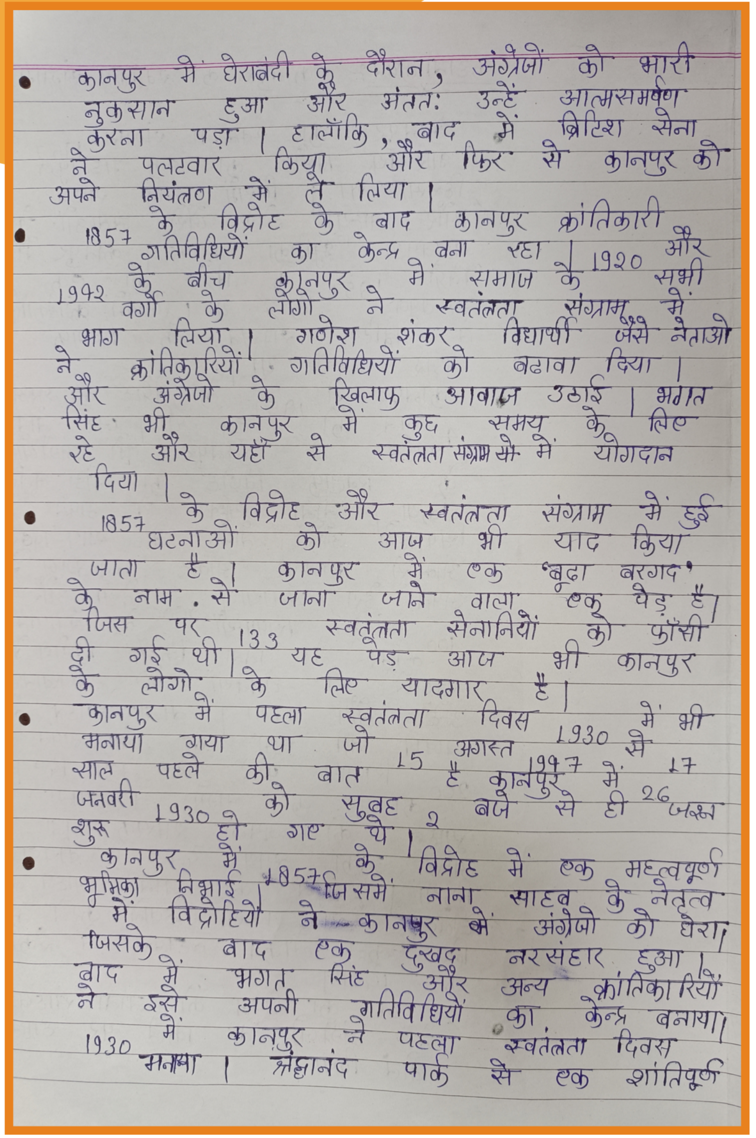

- कानपुर में घेराबंदी के दौरान, अंग्रेजों को भारी नुकसान हुआ और अंततः उन्हें आत्मसमर्पण करना पड़ा। हालाँकि, बाद में ब्रिटिश सेना ने पलटवार किया और फिर से कानपुर को अपने नियंत्रण में ले लिया।
- 1857 के विद्रोह के बाद कानपुर क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र बना रहा। 1920 और 1942 के बीच कानपुर में समाज के सभी वर्गों के लोगो ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे नेताओ ने क्रांतिकारियों गतिविधियों को बढ़ावा दिया। और अंग्रेजो के खिलाफ आवाज उठाई। भगत सिंह भी कानपुर में कुछ समय के लिए रहे और यहाँ से स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।
- 1857 के विद्रोह और स्वतंत्रता संग्राम में हुई घटनाओं को आज भी याद किया जाता है। कानपुर में एक 'बूढ़ा बरगद' के नाम से जाना जाने वाला एक पेड़ है। जिस पर 133 स्वतंत्रता सेनानियों को फाँसी दी गई थी। यह पेड़ आज भी कानपुर के लोगो के लिए यादगार है।
- कानपुर में पहला स्वतंत्रता दिवस 1930 में भी मनाया गया था जो 15 अगस्त 1947 से 17 साल पहले की बात है कानपुर में 26 जनवरी 1930 को सुबह 2 बजे से ही जश्न शुरू हो गए थे।
- कानपुर में 1857 के विद्रोह में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसमें नाना साहब के नेतृत्व में विद्रोहियों ने कानपुर में अंग्रेजो को घेरा। जिसके बाद एक दुखद नरसंहार हुआ। बाद में भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारियों ने इसे अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया। 1930 में कानपुर ने पहला स्वतंत्रता दिवस मनाया। श्रद्धानंद पार्क से एक शांतिपूर्ण

(पृष्ठ 02)

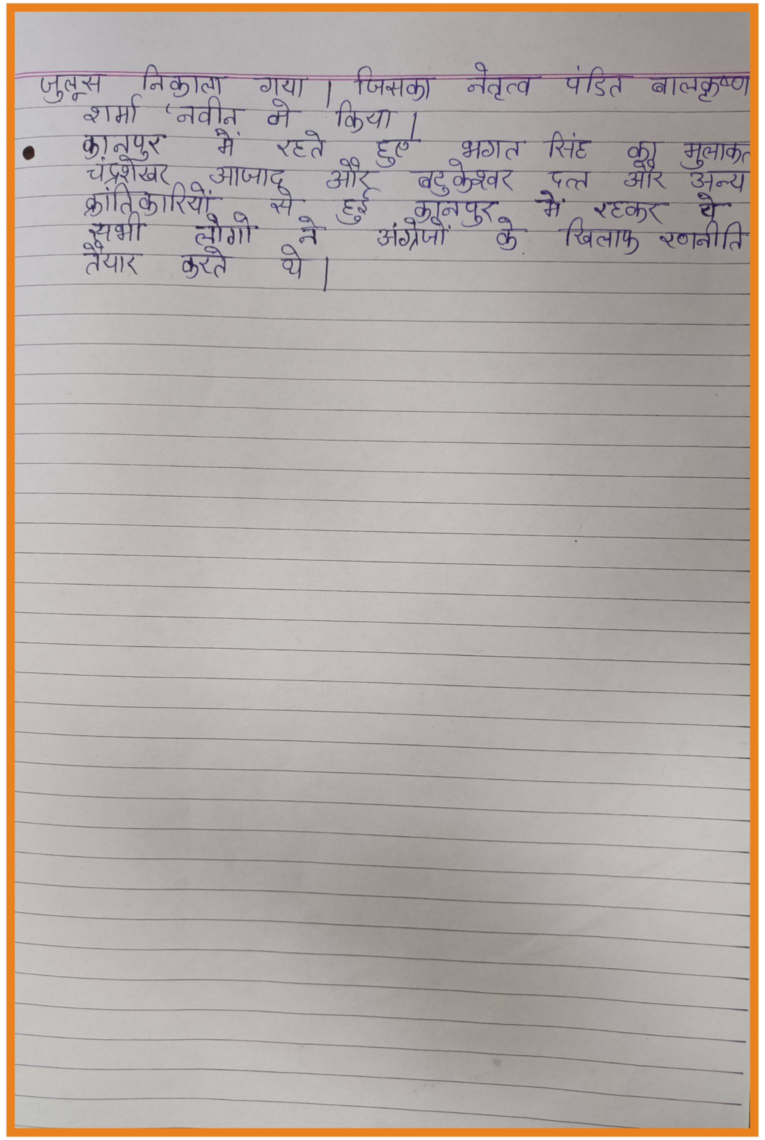

जुलूस निकाला गया। जिसका नेतृत्व पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने किया।

- कानपुर में रहते हुए भगत सिंह की मुलाकात चंद्रशेखर आजाद और बटुकेश्वर दत्त और अन्य क्रांतिकारियों से हुई कानपुर में रहकर ये सभी लोगो ने अंग्रेजों के खिलाफ रणनीति तैयार करते थे।

(पृष्ठ 03)

उदेतपुर, विकास खण्ड
चौबेपुर।

कहानी प्रतियोगिता प्रथम चरण

चयनित 05 ग्रामों के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य कहानी प्रतियोगिता

दिनांक: 23/25 अगस्त 2025

ईश्वरीगंज
विकास खण्ड
कल्यानपुर

होरा कछार
विकास खण्ड
कल्यानपुर

उदेतपुर
विकास खण्ड
चौबेपुर

गबड़हा
विकास खण्ड
चौबेपुर

सुनौढ़ा
विकास खण्ड
चौबेपुर

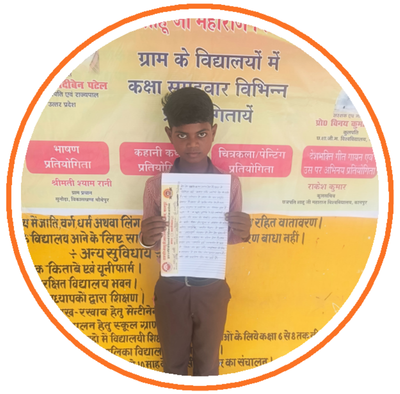

उदेतपुर, विकास खण्ड चौबेपुर।

कहानी प्रतियोगिता प्रथम चरण

चयनित 05 ग्रामों के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य कहानी प्रतियोगिता

दिनांक: 23/25 अगस्त 2025

ग्राम- ईश्वरीगंज
विकास खण्ड कल्यानपुर
1-प्राथमिक विद्यालय-01
2-पूर्व माध्यमिक विद्यालय-01
3-राजकीय हाईस्कूल, बैकुंठपुर-01

ग्राम- होरा कछार
विकास खण्ड कल्यानपुर
1-प्राथमिक विद्यालय-01
2- उच्च प्राथमिक विद्यालय-01

उदेतपुर, विकास खण्ड चौबेपुर।

कहानी प्रतियोगिता प्रथम चरण

चयनित 05 ग्रामों के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य कहानी प्रतियोगिता

दिनांक: 23/25 अगस्त 2025

ग्राम- उदेतपुर
विकास खण्ड चौबेपुर

1-प्राथमिक विद्यालय-01
2-प्राथमिक विद्यालय, घाघपुर -01

ग्राम- गबड़हा
विकास खण्ड कल्यानपुर

1-प्राथमिक विद्यालय, प्रथम-01
2-प्राथमिक विद्यालय, द्वितीय-01
3-पूर्व माध्यमिक विद्यालय-01
4-एस.एस.एस. श्री गुरूदयाल सिंह, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
5-भजनलाल स्वतंत्रता संग्राम सेनानी इण्टर कालेज

उदेतपुर, विकास खण्ड चौबेपुर।

कहानी प्रतियोगिता प्रथम चरण

चयनित 05 ग्रामों के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य कहानी प्रतियोगिता

दिनांक: 23/25 अगस्त 2025

ग्राम- सुनौढ़ा
विकास खण्ड चौबेपुर
1-प्राथमिक विद्यालय-01
2-उच्च प्राथमिक विद्यालय -01

ACCREDITED WITH GRADE A++ NAAC

Recognised as Category 1 University By UGC, MHRD

QS ASIAN UNIVERSITY RANKINGS

ASIA 2025 : SOUTHERN ASIA

प्रो0 विनय कुमार पाठक

कुलपति

प्रो0 सुधीर कुमार अवस्थी

प्रति कुलपति

श्री अशोक कुमार त्रिपाठी

वित्त अधिकारी

श्री राकेश कुमार

कुलसचिव

डा0 प्रवीन कटियार

समन्वयक

www.csjmu.ac.in

x.com/csjmuofficial

www.facebook.com/csjmuofficial